पीजीआईएमईआर, चंडीगढ क़े 30वें दीक्षान्त समारोह में प्रधानमंत्री का व्याख्यान

3 नवंबर, 2009

मैं आज इतने सारे ऊर्जावान, आशावान और सृजनशील युवाओं के बीच आकर बहुत खुशी महसूस कर रहा हूँ। सबसे पहले मैं उन लोगों को बधाई देना चाहता हूँ जिन्हें आज डिप्लोमा और पदक प्रदान किए जाने हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस शानदार संस्थान में आपको अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने यहां जो ज्ञान और कौशल प्राप्त किया है वह आने वाले समय में आपके पेशेवर जीवन में बहुत सहायक होगा। मैं जानता हूँ कि आगे आपके लिए अवसर और चुनौतियां दोनों से परिपूर्ण भविष्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। मुझे यकीन है कि इस महान संस्थान में आपने जो शिक्षा प्राप्त की है, उससे आप अपनी पेशेवर जिन्दगी में कामयाबी हासिल करेंगे।

लेकिन एक बात मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि पेशेवर पुरुष और महिलाएं अपनी पेशेवर जिन्दगी में जो कुछ करते हैं, हमारा समाज यह चाहता है कि वे इससे बढ़कर कोई काम करें। जैसे-जैसे आप जीवन में और अपने पेशे में आगे बढ़ेंगे, हमारे लोग चाहेंगे कि आप इस संस्थान के उद्देश्य " आर्त सेवा सर्व भद्रा शोधश्च" यानी "निर्धनों की सेवा और सबके भले के लिए अनुसंधान" की बात को समझेंगे आपको हमेशा आम आदमी की भलाई को ध्यान में रखना चाहिए और इस दिशा में योगदान करना चाहिए। यही वह नुस्खा है जो करिश्माई व्यक्तित्व वाले व्यक्ति महात्मा गांधी आजाद भारत के सभी निर्धनों को देना चाहते थे। इस समाज और देश ने आपको जो दिया है उसे वापस करने का रास्ता आपको खोजना चाहिए। हमारा देश यह आशा करता है कि आप अपनी पेशेवर जिन्दगी के महत्त्व को कभी नहीं भूलेंगे और नैतिक जीवनयापन पर जोर देंगे। रोजाना जिन्दगी की आपाधापी में इसे याद रखना और इसका पालन करना आसान नहीं है, लेकिन आप सभी प्रतिभाशाली युवा हैं और आम लोगों की तुलना में इस लक्ष्य को प्राप्त करने में ज्यादा सक्षम हैं। मुझे पूरा भरोसा है कि यह आकांक्षा आपकी पेशेवर जिन्दगी को दिशा देगी।

स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान की स्थापना दो महान नेताओं पंडित जवाहर लाल नेहरू और सरदार प्रताप सिंह कैरो के सपने और जोश का नतीजा है। यह संस्थान का सौभाग्य था कि अपनी स्थापना के शुरुआती सालों में उसे तीन शानदार इन्सानों और औषध व शल्य चिकित्सा के बेहतरीन लोगों-- डॉ0 तुलसी दास, डॉ0 संतोख सिंह आनन्द और डॉ0 पी.एन. चुटानी का नेतृत्व मिला। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इन तीनों को व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ। ये तीनों अपने शिक्षार्थियों और समाज के लिए प्रेरणा का अथाह स्रोत रहे। आज इस संस्थान को उच्च चिकित्सकीय शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए प्रमुख संस्थान के रूप में जाना जाता है। मैंने पिछले कुछ वर्षों के दौरान संस्थान को मजबूत और बेहतर होते देखा है। हर साल इसकी सुविधाओं और क्षमताओं में इजाफा हुआ है। हम यथास्थिति से संतुष्ट नहीं हो सकते और हमें इसे और बेहतर बनाने का मार्ग तलाशना होगा। अब यहां एक नेत्र केन्द्र और एक अग्रणी हृदय शल्य केन्द्र भी खुल गया है, जहां गरीबों को उन्नत सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। पीईटी स्कैन सेन्टर और गामा नाइफ सेंटर जैसी शानदार

अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का लाभ अब रोगियों को मिल रहा है। अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण केन्द्र और कीमोथैरेपी वार्ड स्थापित किए गए हैं। मुझे बताया गया है कि 2005 में जब मैं यहां आया था और मैंने जिस टेली-मेडीसिन लिंक का उद्घाटन किया था उससे अब भूटान और अफगानिस्तान में टेली-शिक्षा सत्र चलाया जाता है। इसके जरिए पंजाब के विभिन्न इलाकों में मरीजों को सलाह भी दी जाती है। मुझे यह भी बताया गया है कि भारत भर में प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा भी जल्द शुरू की जाएगी। ऐसे सभी विकास आपकी भावी उन्नति का द्योतक है। यहां पिछले पाँच वर्षों के दौरान किए गए प्रयासों और शानदार नेतृत्व प्रदान करने के लिए मैं यहाँ डॉ0 तलवार की सराहना करूँगा। लेकिन मैं आपसे यह भी आग्रह करूँगा कि आप इतने भर से ही संतुष्ट न रहें। आपको अपने संस्थान के उच्च्य स्तर और उसकी नेतृत्वकारी स्थिति को बनाए रखने के लिए लगातार प्रयास करते रहने की जरूरत पड़ेगी। हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जहां मानव ज्ञान अभूतपूर्व गति से बढ़ रहा है और यदि हमारे संस्थानों को इस गति से तालमेल बनाए रखना है तो हमें उच्च्य शिक्षा और खासतौर से चिकित्सा विज्ञान में अग्रणी होना पड़ेगा।

पिछले कई दशकों में भारत ने स्वास्थ्य निर्धारक कारक के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संकेतकों से पता चलता है कि पिछले कई वर्षों में इस दिशा में लगातार विकास हुआ है। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि सार्वजनिक क्षेत्र में हम सकल घरेलू उत्पाद का एक प्रतिशत ही स्वास्थ्य पर खर्च कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य रहा है कि इसे हम दो से तीन प्रतिशत तक बढ़ाएं। केन्द्र और राज्य सरकारों, दोनों को यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। हम जो प्राप्त कर सकते थे या जिसे प्राप्त करने की हमारी क्षमता थी, उसकी तुलना में हमारी प्रगति बहुत कम है। कई अन्य देशों और खासकर दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के मुकाबले भी यह बहुत कम है।

हमारी आबादी के स्वास्थ्य स्तर में और अधिक सुधार लाने के लिए केन्द्र सरकार ने पिछले पांच वर्षों में स्वास्थ्य क्षेत्र को उच्च्य प्राथमिकता दी है । इस क्षेत्र के लिए जो वित्त प्रावधान किया गया उसमें भी 11वीं पंचवर्षीय योजना में उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी की गई । पिछली योजना की तुलना में यह तीन गुना कर दिया गया । हमने राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरुआत की जिसका उद्देश्य है देश के ग्रामीण इलाकों में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करना और उसमें सुधार करना । मिशन विकेन्द्रीकृत आयोजना और कार्यान्वयन पर जोर देता है जिसकी समुदाय आधारित निगरानी हो।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की समीक्षा से पता चला है कि स्वास्थ्य क्षेत्र-विशेषज्ञों, चिकित्सकों, नर्सों और पैरामेडिक्स के कई स्तरों पर मानव संसाधन की बेहद कमी है । सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रदान करने वाली प्रणाली को मजबूत बनाने और स्वास्थ्य सेवा को सबकी पहुंच में लाने के कार्य में यह सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है । इस कमी को दूर करने के लिए सरकार ने कई पहले की हैं और अधिक मेडिकल कालेज और नर्सिंग स्कूल खोले जा रहे हैं खासतौर से कम विकसित राज्यों में। मेरे सहयोगी श्री गुलाम नबी आजाद पहले ही इसके बारे में बता चुके हैं। विशेषज्ञता और अति विशेष अध्ययनों के लिए शिक्षार्थी-शिक्षक अनुपात को 1:1 से बढ़ाकर 2:1 कर दिया गया है । आशा की जाती है कि कम समय में ही स्नातकोत्तर स्तर पर विशेषज्ञता प्राप्त चिकित्सकों की वर्तमान 13000 संख्या में 5000 का इजाफा हो जाएगा । राज्य सरकारों के मेडिकल कालेजों को सुदृढ़ और

उन्नत करने की एक नई योजना भी शुरू की जा रही है ताकि देशभर में स्नातकोत्तर मेडिकल सीटों की संख्या बढ़ाई जा सके ।

जैसा कि अर्थशास्त्र में होता है, वैसे ही चिकित्सा में भी उच्च स्तरीय अनुसंधान में खो जाना और जमीनी हकीकतों को भूल जाना आसान होता है । जनता की यह आम धारणा है कि जो संस्थान जनता के पैसे से चलते हैं वे आगे चलकर सफेद हाथी बन जाते हैं । ऐसा माना जाता है कि हमारी आबादी के गरीब और वंचित वर्ग की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली तक उचित पहुंच नहीं हो पाती । प्रणाली के ढांचे में सुधार की आवश्यकता है ताकि सबसे निचले स्तर पर प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य सेवा में सुधार हो सके । इसे देश की महिलाओं और बच्चों की जरूरतों के प्रति और अधिक संवेदनशील बनाना होगा । हमें यह भी मालूम होना चाहिए कि स्वास्थ्य सेवा की अस्पताल आधारित उपचार प्रणाली उन्नत अमीर व विकसित देशों में भी बहुत मंहगी साबित हुई है । अमेरिका में स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार पर जारी वाद-परिवाद मेरे उपरोक्त कथन को दर्शाता है । रोकथाम वाली स्वास्थ्य सेवा पर उचित जोर देने के लिए अधिक संतुलित समझ बनानी होती है ।

पीजीआई का मिशन तब तक अधूरा रहेगा जब तक आम आदमी के हितों पर प्रभावकारी और उद्देश्यपूर्ण तरीके से ध्यान नहीं दिया जाएगा । आपके संस्थान जैसे संस्थानों को समुदाय के साथ और अधिक प्रभावकारी ढंग से जुड़ना चाहिए और उसकी आवश्यकताओं पर ध्यान देना चाहिए। मेडिकल और पैरा-मेडिकल कर्मियों को आम आदमी के कल्याण और उसकी भलाई के प्रति कटिबद्ध होना चाहिए । अपने अनुसंधान के जरिए आपको रोगों की रोकथाम और उपचार के सस्ते उपायों की खोज करनी चाहिए । जब आम आदमी का जीवन चाहे वह त्रिपुरा का हो या छत्तीसगढ़ जनजातीय क्षेत्रों का, जब आपका अनुसंधान उनके जीवन को स्पर्श करेगा और जब वंचित वर्ग का बच्चा आपकी सेवा से संतुष्ट होकर घर लौटेगा तभी आपका मिशन सही अर्थों में पूरा माना जाएगा । मैं फिर इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि आपका व्यवसाय कोई साधारण वाणिज्यिक व्यवसाय नहीं है । यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें नैतिक जीविकोपार्जन की आवश्यकता है ।

मैं कामना करता हूं कि आने वाले वर्षों में यह संस्थान, यहां के शिक्षक, यहां का अमला और शिक्षार्थी बेहतरीन काम करेंगे । मुझे यकीन है कि आप इस संस्थान के मिशन और जनता की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को उचित रूप से पूरा करने के लिए अथक प्रयास जारी रखेंगे । मैं अंत में एक बार फिर आज डिप्लोमा, डिग्री और पदक पाने वालों को बधाई देता हूं । ईश्वर आपका मार्ग प्रशस्त करे ।

***